Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 01-03

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

सम्पादकीय...

सनातन संस्कृति का अद्भुत महाकुंभ

साधक राजकुमार
सम्पादक

2025 प्रयागराज का महाकुंभ ऐसे शुभमुर्हूत में हो रहा है जो 144 वर्षो बाद आया। समुद्र मंथन में रत्नों के साथ अमृत गिरा जहाँ पर कुम्भ लगा है। सत्य सनातन भारतीय संस्कृति में सर्वपंथ समागम का अद्भुत संगम होता है, कुंभ में जिसमें धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक चुनौतियों के समाधान की सर्वमान्य ''राह'' निकाली जाती है। संत समाज, आमजन बिना भेदभाव के समरस हो साथ संगम में डुबकी लगाकर ''लोकमंगल'' सर्वे भवन्तु सुखिनः की साधना करता है। 2025 का महाकुम्भ 144 वर्षों बाद विशेष शुभ मुहूर्त लिये सम्पन्न हुआ है। सनातन सिद्धान्त के अनुसार परब्रह्म, परमात्मा, अखण्ड, अनन्त हैं। वह ईश्वर, भगवान् आदि नामों से कहा जाता है। उसे प्राप्त करना परम पुरूषार्थ है। उसके प्राप्त करने के अनेक साधन हें। तीर्थ–यात्रा, व्रत, गंगा–स्थान आदि। किन्तु इन सब से अधिक महात्मय 'कुम्भ–महापर्व' का है।

'सूर्यग्रहे कुरूक्षेत्रे कार्तिक्याच त्रिपुष्करे ।
माघमासे प्रयागे च यः स्नायात्सोतिपुण्यवान्।।

''सूर्य–ग्रहण में कुरूक्षेत्र और कार्तिक मास में त्रिपुश्कर क्षेत्र में जो स्नान का फल होता है, उससे अति पौश माघ–मास में प्रयाग–स्नान से होता है।''

सहस्त्रे कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदास्नानं कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।

''हजारों बार कार्तिक–मास में स्नान करने का, सैकड़ों बार माघ–मास में स्नान करने का और वैशाख में नर्मदा–स्नान का जो फल होता है, वह फल कुम्भ–स्नान के एक बार करने पर होता है।''

'कुम्भ–महापर्व' के स्नान से, पाप–ताप, दुःख–निवृत्ति तथा ईश्वर को प्राप्त करने की योग्यता आती है। 'कुम्भ' का अर्थ है–''कुं–कुत्सितम्, उम्भति–दूरयति'' यानी जो कुत्सित–पापमय कुविचारों को दूर करे, वह 'कुम्भ–पर्व' है।

'कुम्भ–महापर्व' अनादि और ऐतिहासिक है। सृष्टि के आदि में सृष्टि–कर्ता भगवान् ब्रह्मा ने कश्यप, दक्ष आदि को मन के संकल्प से उत्पन्न किया। इन मानसिक पुत्रों से कहा–'तुम लोग सृष्टि की वृद्धि करो। दक्ष प्रजापति के अनेक कन्यायें थीं। उन्होंने कश्यप आदि प्रजापति के साथ उनका विवाह कर दिया। कश्यप के दिति तथा अदिति नाम की पत्नी थीं। दिति से दैत्य उत्पन्न हुये और अदिति से देवता। देवताओं को स्वर्ग का स्वामी और दैत्यों को पाताल का स्वामी बनाया। इससे दैत्य प्रसन्न न हुये, वह स्वर्ग का राज्य चाहते थे। दैत्यों ने तपस्या और भौतिक बल–एकत्रित कर, देवताओं से स्वर्ग का राज्य छीन लिया। देवता राज्य–भ्रष्ट हो गये। वह भगवान् विष्णु की शरण गये। भगवान् ने उन्हें उपाय बतलाया कि ''दैत्यों से सन्धि करो ओर उन्हें साथ लेकर अमृत के लिए समुद्र–मंथन करो''। देवताओं ने यही किया। दैत्य समुद्र मंथन के लिए तैयार हो गये। सुमेरू पर्वकी की मथानी और वासुकि नाग की रस्सी बनाई गई। स्वयं भगवान् कच्छप रूप धारण कर, समुद्र में अपनी पीठ पर सुमेरू पर्वत को धारण किये थे। समुद्र–मंथन से अनेक वस्तुये निकलीं। उन्हें देवता और दैत्य लेते गये। फिर 'अमृत–कुम्भ' निकला। उसे देवता–दैत्य दोनों लेना चाहते थे। इस पर दोनों में विवाद हो गया। कोई 'अमृत–कुम्भ' लेता, उससे दूसरा छीनता।

इस प्रकार बारह दिव्य दिनों तक छीना–झपटी होती रही। देवताओं का एक दिन, मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। अतः यह विवाद बारह वर्ष तक चला।

विवादे काश्यपेयानां यत्र यत्रावनिस्थले। कलशोभ्यपतद्यत्र कुम्भपर्वस्तदुच्यते।।

''कश्यप–पुत्र देव–दानवों में 'अमृत–कलश' के विवाद में, जहाँ–जहाँ भूमि पर कलश रखा गया, वहां–वहां 'कुम्भ–पर्व होता है।

चन्द्रः प्रस्रतवणाद्रक्षां सूर्यो विष्फोटनाधौ।
दैत्येभ्यश्च गुरू रक्षा सौरिर्देवेन्द्रजाद्भयाल।।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

''देव–दानवों के युद्ध से 'अमृत–कुम्भ' की रक्षा चन्द्र, सूर्य, वृहस्पति और भगवान् विश्णु ने की यानी अमृत भूमि में गिर न पड़े, इसकी रक्षा चन्द्र ने की, कुम्भ के फूटने की रक्षा सूर्य ने की, दैत्यों से रक्षा गुरू ने और इन्द्र पुत्र जयन्त से रक्षा भगवान् ने की।

सूर्येन्दुगुरूसंयोगस्तद् राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भ प्लवे भूमौ कुम्भो भवति नान्यथा।।

''जब भूमि में सुधा–कुम्भ गिरा था, उस समय एक राशि में यानी जिस–जिस राशि में सूर्य, चन्द्र तथा गुरू का संयोग था, उसी प्रकार जिस वर्श में यह योग होता है, तब कुम्भ –पर्व होता है, अन्य वर्श में नहीं।''

देवानां द्वादशाहोभिः मर्त्यद्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादशसंख्यया।।
तत्राद्यनुत्तये नृणां चत्वारि भुवि भारते।
अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः।।

''देवों के बारह दिन के समान मनुष्यों के बारह वर्ष होते हैं। इसलिये 'कुम्भ–पर्व' भी बारह संख्या वाले होते हैं। उन बारह 'कुम्भ–पर्व में प्रथम चार कुम्भ–पर्व मनुष्यों के पाप–नाश के लिए भारत–भूमि में होते हैं और आठ अन्य लोकों में कहे गये हैं। वहां देवता ही जा सकते हैं और कोई नहीं।

''भारत–भूमि में चार कुम्भ–पर्व कहां–कहां होते हैं?'' इसे बतलाते हैं–

पृथिव्यां कुम्भपर्वस्य चतुर्वा भेव उच्यते।
चतुः स्थले निषदनात् सुधाकुम्भस्य भारते।।
गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरीतटे।
कुम्भाख्यो यस्तु योगोयं प्रोच्यते शंकरादिभिः।।

''भारत–भूमि में अमृत–कुम्भ के रखने का या गिरने के चार स्थान हैं, अतः पृथिवी में कुम्भ–पर्व के चार भेद हैं। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और गोदावरी–तट पर नासिक में कुम्भ–पर्व होते है। जो यह कुम्भ संज्ञक योग है, इसे भगवान् शंकर आदि ने स्वीकार कर, कहा है।''

तान्येति यःपुमान् लोके सोमृतत्वाय कल्पते।
देवा नर्मान्त तत्रस्थान् यथा रंका धनाधिपान्।।
अश्वमेघसहस्त्रेभ्यो वाजपेयशतादपि।
पृथिवीदानलक्षाच्च कुम्भयोगो विशिष्यते।।

''जो लोग कुम्भ–पर्व पर स्नान करते हैं, वह देवलोकों को प्राप्त होते हैं और अमृतत्व–प्राप्त करने की योग्यता आ जाती है। जैसे निर्धन तथा धनवान सभी लोग आते हैं, वैसे ही देवता भी इस स्थान को नमस्कार करते हैं और भेश–बदल कर आते है, हजारों अश्वमेघयज्ञ, सैकड़ों वाजपेययज्ञ और लाखों बार पृथवी–दान से भी, कुम्भ–स्नान का फल विशेश होता है।''

''यह कुम्भ–पर्व कहां–किस समय होते हैं?'' इस जिज्ञासा पर बतलाया गया है–

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेद्योगः कुम्भकामा जदीत्तमाः।।
मकरे च दिवानाथे वृषराशिस्थिते गुरो।
प्रयागे कुम्भयोगोयं माघमासे विधुक्षये।।
सिंहे गुरौ तथा सूर्ये सिंहे चौव दिशाकरे।
तदामायां स धारायां कुम्भो भवति मुक्तिदः।।
कर्के गुरूस्थता भानुश्चन्द्रश्चन्द्रक्षयो यदा।
गोदावर्या तदा कुम्भी जायतेवनिमण्डले।।

''जब मेश–राशि में सूर्य और कुम्भ–राशि में वृहस्पति हों, तब पुण्यकाल संक्रान्ति के समय हरिद्वार में उत्तम 'कुम्भ' नामक योग होता है। मकर–राशि में सूर्य, वृश–राशि में स्थित वृहस्पति और माघमास की अमावस्या होने पर प्रयाग में यह 'कुम्भ'–योग होता है। जब सिंह राशि में वृहस्पति, सिंह राशि में सूर्य और चन्द्र भी सिंह राशि में हो, अमावस्या–तिथि ही, तब उज्जैन में क्षिप्रा–तट पर मुक्ति–दाता कुम्भ होता है। जब कर्क राशि में वृहस्पति और इसी में सूर्य तथा चन्द्रमा हों, अमावस्या तिथि हो, तब भूमिमण्डल पर गोदावरी तट नासिक में कुम्भ होता है।

Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

गंगा जी का माहात्मय : इस प्रकार एक–एक स्थान में, बारह वर्श पर कुम्भ योग आता है। इसमें समस्त देश के आस्तिक लोग स्नान, दान, कथा, सत्संग आदि से लाभ प्राप्त करते हैं। इस अवसर पर साधु, संन्यासी, योगी, तपस्वी, भक्त आदि पर्वत तथा एकान्त–वासियों के दुर्लभ दर्शन भी होते हैं। चार कुम्भ पर्व में दो कुम्भ पर्व उत्तरीय भारत के उत्तर प्रदेश में होते हैं। प्रथम प्रसिद्ध स्थान हैं हरिद्वार और दूसरा प्रयाग दोनों स्थानों में पाप–ताप–हारिणी श्री गंगा जी में स्नान होता है। गंगा जी साक्षात् ब्रह्म–द्रव–स्वरूपिणी हैं। इसमें श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त विधि में स्नान करना चाहिये। महाभारत में कहा है:

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चौव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च योर्निश्च स तीर्थफलमश्नुते।।

''जिसके हाथ–पैर चंचल न हों, इन्द्रियां तथा मन अच्छी प्रकार अपने वश में हो और जो शास्त्र–विद्या में विश्वास रखता हो, तीर्थ–प्राप्ति के लिये शारीरिक कश्ट उठाता हो एवं सचरित्र माता–पिता का पुत्र हो, यह तीर्थ का पूर्ण फल–प्राप्त करता है।'' गंगा–तट पर चौदह कार्य नहीं करना चाहिये

गंगा पुण्यजलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत्।
शौचमाचमनं केशं निर्माल्यमघमर्षणम्।।
गात्रसंवाहनं क्रीड़ा प्रतिग्रहमथो रतिम्।
अन्यतीर्थरतिं चौव अन्यतीर्थप्रशंसनम्।।
वस्त्रत्यागमथाघातं संतारं च विशेषतः। प्रायश्चित–तत्व 1/535

''पुण्यसलिला श्री गंगा जी के समीप जाकर, विशेशरूप से चौदह कार्य कभी नहीं करने चाहियें–समीप में मल–मूत्र–त्याग, गंगा जी में आचमन (कुल्ला), बाल–झाड़ना, निर्माल्य छोड़ना, मैल–छुड़ाना, शरीर मलना, खेल करना, दान लेना, रति क्रिया, दूसरे तीर्थ में अनुराग, दूसरे तीर्थ की प्रशंसा, कपड़ा धोना या छोड़ना, जल पीटना तथा तैरना।'' तात्पर्य तीर्थ–यात्रा में अत्यन्त सरलता, सादगी तथा श्रद्धापूर्वक रहना चाहिये। जैसी भावना होती है, वैसा ही फल होता है।

आधुनिक, वैज्ञानिक, डिजिटल महाकुंभ व्यवस्था :प्रयागराज में देश–दुनिया के श्रद्धालु डिजिटल महाकुंभ के भी साक्षी बनेंगे। डिजिटल नेविगेशन की मदद से आगंतुकों को अलग–अलग घाट, मंदिर, साधुओं के अखाड़े तक पहुंचने का रास्ता मिलेगा, यही नेविगेशन सिस्टम पार्किंग तक पहुंचने में भी मदद करेगा। पहली बार कुम्भ आयोजन में एआई चौटबॉट का प्रयोग होगा। इसके माध्यम से 11 भारतीय भाषाओं में कुम्भ से जुड़ी हर जानकारी हासिल की जा सकेगी। इस चौट बॉट से टेक्स्ट टाइप करके या बोलकर किसी भी तरह की मदद मांग सकते हैं। मेला क्षेत्र को एआई पावर्ड कैमरा से कवर किया जा रहा है। कुम्भ में कोई बिछड़ जाएगा तो इन कैमरों से उन्हें खोजने में भी मदद मिलेगी। श्रद्धालुओं को डिजिटल लॉस्ट एंड फाउंड सेंटर की सुविधा भी मिलेगी। श्रद्धालुओं को मोबाइल पर गवर्नमेंट अप्रूव्ड टूर पैकेजेस ठहरने की जगह और होमस्टे के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

आज तीर्थ स्थानों को भी पर्यटन स्थल के रूप में समाज व्यवहार कर रहा है। जिसके कारण पर्यावरण पर संकट खड़ा है। आज स्वच्छता में प्लास्टिक, कूड़ा भी गम्भीर समस्या बन रहा है। नदियों के जल में भी दूशित जल मिलने के कारण समस्या है। हम इनकी पवित्रता बनायें।

*****